''स्पंदन''

समाचार - पत्रिका

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास (अजमेर) का त्रैमासिक समाचार पत्र
(सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था पंजीयन सं. 19/ए.जे.एम./87-88)

केवल निजी वितरण हेतु | अंक (20) वर्ष (4) | जून 2013 से अगस्त 2013

"सम्पादकीय"

आज हम देखते हैं कि सब जगह बच्चों को जन्म से ही अच्छा पढ़ने वाला, सोचने वाला और समझदार बनाने के प्रयास प्रारम्भ हो जाते हैं। इस प्रयास में जहाँ बच्चों से उनका बचपन छिन जाता हैं वही उनकी कल्पना, अभिव्यक्ति एवं सृजनशीलता का भी अन्त हो जाता है।

इस अंक में बच्चों और बड़ों के कुछ प्रत्यक्ष देखे हुए प्रकरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

आशा है हम सब के लिए ये प्रेरणा और कुछ सीखने/बदलने का माध्यम बनेंगें।

शुभकामनाओं सहित।

✍ मुख्य सम्पादक

लिखते रहिए

आपके सुझावों एवं फीड बैक का हमेशा इंतजार रहता है, अतः कृपया लिखते रहिए

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक : राकेश कुमार कौशिक

: सम्पादन समिति :

क्षमा आर. कौशिक, तरुण शर्मा,
पद्मा चौहान, लक्ष्मणसिंह चौहान

धन्यवाद

- श्री अनिल अरोड़ा ज्ञान सखा बनकर एक विकलांग बच्चे के शिक्षण-प्रशिक्षण में सहयोग देने हेतु।
- श्री किशोर ठाकुर एवं श्री नितिन तोषनीवाल द्वारा संजय इन्क्लूसिव स्कूल, ब्यावर के बच्चों को स्कूल लाने हेतु ऑटो किराये में सहयोग देने हेतु एवं श्री गजेन्द्र ब्यास द्वारा जूते एवं यूनिफार्म सहयोग देने हेतु।
- श्री आर.के. अजमेरा द्वारा बच्चों के लिए कम्प्यूटर देने हेतु।
- श्री एस.एन. नुवाल लायन्स क्लब, अजमेर द्वारा नियमित आयुर्वेदिक दवाईयां एवं मेडीकल चेकअप हेतु धन्यवाद।

बचपन में बच्चों को बड़ा ना बनाएं

1. गर्वित : मेरे मित्र का पुत्र गर्वित, उम्र 6वर्ष हर खिलौने को तोड़ देता है मित्र बहुत परेशान हैं और गर्वित को कहता है कि तुम बहुत शैतान हो दूसरे बच्चों को तो खेलने को खिलौने ही नहीं मिलते हैं और तुम्हें मैं इतने अच्छे और महंगे खिलौने लाकर देता हूँ पर तुम्हे बिल्कुल परवाह नहीं हैं अब मैं तुम्हे कोई खिलौना लाकर ही नहीं दूगाँ तब तुम्हें अक्ल आयेगी।

2. परी : मेरे पड़ौसी की बिटिया परी, उम्र 8 वर्ष, कॉलोनी व आस-पास में से अलग-अलग पत्ते, पत्थर के टुकड़े, टॉफी के रेपर, शंख, पत्तियाँ आदि एकत्रित करती रहती है परी की मम्मी उससे बहुत दुःखी है वो परी को हमेशा इसके लिए डांटती रहती हैं और परी को कहती हैं पापा ने तुम्हे इतने अच्छे-अच्छे खिलौने और गेम्स लाकर दिये है पर तुम उनसे नहीं खेलती हो और कचरा इकट्ठा करके तुम उससे खेलती हो। ये सब कचरा गन्दा होता है तुम कचरे के साथ खेलोगी तो बीमार पड़ जाओगी। आस-पास के लोग देखते होगें तो क्या कहेंगे कि देखो शर्मा जी की लड़की कचरा बीन रही है ऐसा तो झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोग करते हैं। यदि तुमने मेरा कहना नहीं माना तो में तुम्हारा घर से बाहर जाना बन्द करवा दूंगी।

3. समू : समू 5 वर्ष की बच्ची है उसे चित्र बनाने और टेड़े-मेढ़े अक्षर, आकृतियाँ बनाने का शौक है। उसने घर की दिवारों पर, पलंग पर, टेबल पर यहाँ तक की कपड़ों पर भी पेन से, मार्कर से, पेन्सिल से, अनेकों चित्र आकृतियाँ और अक्षर बना डाले हैं। उससे परेशान उसके पापा ने उसकी कई बार तो पिटाई कर दी। समू को समझाया भी कि ये दीवारों, पलंगो पर नहीं लिखते हैं। लिखने या चित्र बनाने में कॉपी या ड्राईगं शीट काम मे लेते हैं। परन्तु समू है कि मानती ही नहीं। पिटाई के बाद भी छुप-छुप कर दीवारों पर चित्र बनाती है। उससे परेशान उसके पापा ने पूरे घर मे जहाँ-जहाँ तक समू का हाथ जाता हैं वहाँ तक टाइल्स लगवा दी है ताकि समू दीवारों पर चित्र आदि ना बना सके। अब समू के पापा बड़े खुश हैं कि समू अब दीवारो को खराब नहीं कर पायेगी और वो समू को बोलते भी हैं कि अब बता दीवारें खराब करके।

ये तीनों विवरण या प्रकरण आपके सामने है मेरे पास ऐसे और भी बहुत प्रकरण है और शायद आपके पास भी। यदि इन प्रकरणों पर विचार किया जाये तो क्या लगता है आपको ?

क्या अभिभावक बच्चों के साथ सही निर्णय कर पा रहे ? क्या बच्चों को उनका बचपन जीने दिया जा रहा हैं ? नहीं, ये सभी प्रकरण इस बात

की ओर इंगित करते हैं कि बच्चों के बचपन को दबाने या नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा हैं। गर्वित के प्रकरण को देखें तो गर्वित के पिता उसे अपनी दृष्टि से अच्छा क्या हैं और खराब क्या हैं यह बताने का प्रयास कर रहे हैं साथ ही उसे महंगा और सस्ता भी समझाने का प्रयास कर रहे हैं। वो बताना चाह रहे है कि मंहगे खिलौने ही अच्छे होते है जबकि यदि गर्वित की दृष्टि से देखे तो गर्वित जिज्ञासु प्रवृति का हैं वो जानना या पता लगाना चाहता है कि इस खिलौने के अन्दर क्या हैं ये खिलौना चलता कैसे हैं ? आवाज कहाँ से निकल रही हैं और गर्वित के इन प्रश्नों का उत्तर खिलौने को खोलने से या तोड़ने से पता चलेगा। अब यदि गर्वित के पापा यदि खिलौनो का टूटना नुकसान मानते हैं तो ये उनकी दृष्टि में है ना गर्वित की दृष्टि में, अत: यदि वो नुकसान से बचने के लिए गर्वित को खिलौना लाकर ही नहीं देंगे तो इससे उनका नुकसान होने से तो बचेगा किन्तु गर्वित का भविष्य अंधकारमय हो सकता हैं और जैसा कि उसके पापा ने कहा कि खिलौने लाकर नहीं दूंगा तब तुम्हे अक्ल आयेगी मेरी दृष्टि में वो गर्वित की अक्ल आने की नहीं बल्कि गर्वित की अक्ल खत्म करने का अनायास ही प्रयास कर रहे हैं।

अब बात करते हैं परी की वो अलग-अलग वस्तुए जैसे शंख, पत्थर के टुकड़ें और पत्तियाँ आदि एकत्रित करती हैं परन्तु उसकी मम्मी को ये कचरा इकट्ठा करने जैसा लगता हैं जबकी परी अपनी ओर से इन सब वस्तुओं को एकत्र कर इनकी आकृतियां, रंगों, ट्रेक्टर आदि के बारें में नयी जानकारी प्राप्त कर रही है जैसा हम जानते हैं कि बच्चा अपने पूर्व ज्ञान में निरन्तर नये कार्य और वस्तुए देखकर, संग्रह करके अभिव्यक्ति करती हैं हम बड़े (केवल उम्र में) और समझदार लोगों के लिए केवल रुपये पैसें और कीमती वस्तुओं का ही मूल्य होता हैं। परी के लिए और उस जैसे अनेको बच्चों के लिए शंख, पत्थर के टुकड़े, पत्तियाँ, थेलियां आदि मूल्यवान होती हैं, लेकिन हम उन्हें ये बार-बार आभास कराते हैं कि ये वस्तुए बेकार हैं केवल रुपये/पैसें और कीमती वस्तुओं का ही मूल्य होता हैं ये कैसी समझदारी हैं जैसे बड़ें लोग मानते हैं और समझते हैं वैसा ही बच्चें भी माने और समझे ।

तीसरा प्रकरण समू का हैं जो दीवारों, पलंग और टेबल पर लिखना चाहती हैं लेकिन उसके पापा के लिए ये इन सबको खराब करने वाला कार्य है समू अपनी कल्पना से अनेकों चित्र और अक्षर दीवारों, पलंग और टेबल पर बनाती हैं और उसे इसमें मजा आता हैं परन्तु उसके पापा उसे ये कागज और शीट में ये सब करवाना चाहते हैं। वो समू को बच्चों की उम्र में ही बड़ें जैसा व्यवहार और आचरण करना सीखाना चाहते हैं केवल अपने मकान और वस्तुओं की सुन्दरता के लिए वो समू का पक्ष नहीं देख रहे हैं कि उसे इन वस्तुओं पर लिखने/चित्र बनाने में जो Exposure मिल रहा हैं वो कागज और शीट से नहीं मिल रहा है उन्होंने तो घर की दीवारों के बाहर और अन्दर सब जगह समू का जहाँ-जहाँ तक हाथ जाता हैं वहाँ तक टाईल्स लगाकर उसका Exposure और कल्पनाशीलता को ही समाप्त कर दिया हैं। प्रस्तुत सभी प्रकरण बहुत साधारण हैं किन्तु यें प्रत्यक्ष देखे हुए और उनका बच्चों पर पड़ें दुष्प्रभाव को महसूस करने के पश्चात् लिखे गये है ऐसा नहीं हैं कि यें ही प्रकरण मात्र है इससे मिलते-जुलते अन्य प्रकरण भी बच्चों के हम कर रहे होते हैं परन्तु "समझदार" और "शिक्षित" होने के नाते हमारा ध्यान उन पर नहीं जाता हैं। हम सबका यही प्रयास होना चाहिए कि ये प्रकरण केवल किताबों में ही लिखे ना कि असल जिन्दगी में।

सुर्खियाँ जून 2013 से अगस्त 2013 तक

अजमेर

जून-2013

(1) **कम्प्यूटर भेट :** दिनांक 29 जून 2013 को विद्यालय में लायन्स क्लब, अजमेर द्वारा मानसिक विकलांग बच्चों के लिए कम्प्यूटर दिये गये।

जुलाई-2013

(2) **प्रवेश उत्सव :** दिनांक 1 जुलाई 2013 को विद्यालय में प्रथम दिवस नव प्रवेश उत्सव के रूप में हर वर्ष की भांति हर्षोल्लास एवं नई प्रेरणा के साथ मनाया गया। प्रवेश उत्सव पर सभी नव प्रवेशी छात्र-छात्राओं का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय में

अध्ययनरत कक्षा V के छात्र-छात्राओं ने विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को माला पहनाकर स्वागत किया एवं संस्था के अधिशाषी सचिव, श्री सागरमल कौशिक भी उपस्थित थे उन्होने बच्चों को आर्शीवाद प्रदान किया तथा पिछले वर्ष के पांच सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को माला पहनाकर सम्मानित किया।

अगस्त-2013

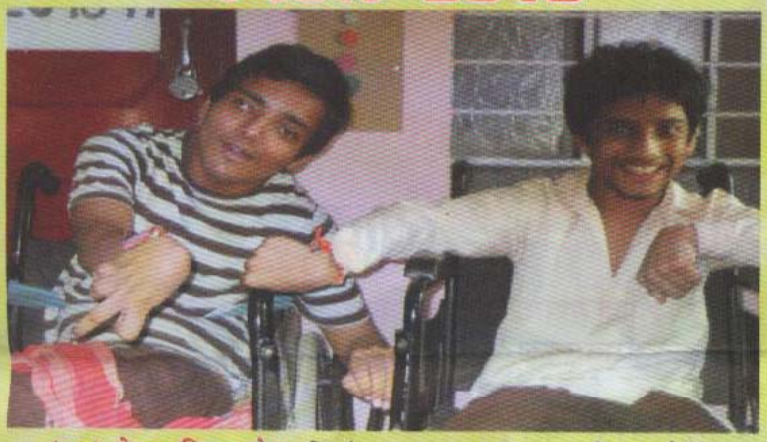

(3) फ्रेण्डशिप-डे : दिनांक 5 अगस्त 2013 मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने सामान्य बच्चों के साथ मिलकर फ्रेण्डशिप-डे मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने एक दूसरे के स्वंय के हाथों से तैयार फ्रेण्डशिप बैण्ड बांधकर मित्रता जताई। संस्था की मुख्य कार्यकारी श्रीमती क्षमा आर. कौशिक ने बताया कि विद्यालय में फ्रेण्डशिप डे आयोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में मित्रता का महत्व समझाना व एक दूसरे मित्र की सहायता व सहयोग की प्रेरणा जगाना हैं। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती मन्जू अग्रवाल ने तथा अध्यापक ईश्वर शर्मा ने मित्रता की प्रेरणा से ओत-प्रोत कहानियां सुनाकर बच्चों को ज्यादा से ज्यादा मित्र बनाने व मित्र के लिए हर परिस्थिति में सहयोग करने की प्रेरणा दी।

(4) ईदुल-फितर : दिनांक 8 अगस्त 2013 को मीनू मनोविकास मदिर इन्क्लूसिव स्कूल के बच्चों ने बड़ी धूम-धाम व हर्षोल्लास के साथ ईद का त्यौहार मनाकर एक दूसरे के साथ खुशियां बांटी आयोजन से पूर्व विद्यालय के बच्चों ने अपने-अपने कक्षाध्यापकों के निर्देशन व सहयोग से ईद मुबारक के कार्ड, गुलाब के फूल व तरह-तरह के चार्ट बनाकर अपनी-अपनी कक्षाओं को सजाया। संस्था के अधिशाषी सचिव श्री सागरमल कौशिक के मुख्य अतिथ्य में आयोजन का आगाज किया गया। सब बच्चों ने मुख्य अतिथि व सभी अध्यापकों को कार्ड व फूल देकर ईद की मुबाकरबाद दी। श्रीमती मन्जू अग्रवाल ने बच्चों को ईद का त्यौहार मनाने का कारण व रमजान की जानकारी दी। सभी बच्चों ने गले लगकर एक दूसरे को ईद की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों को सेवईयों की खीर का आनन्द लिया।

(5) 15 अगस्त 2013 "स्वतन्त्रता दिवस" मीनू मनोविकास मदिर "इन्क्लूसिव स्कूल" में स्वतन्त्रता दिवस पर संस्था के अधिशाषी सचिव श्री सागरमल कौशिक व छात्र अविनाश द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण पश्चात् सभी छात्र-छात्राओं द्वारा राष्ट्रगान किया गया व इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी श्री राकेश कौशिक तथा लेखाकार श्री नेमीचन्द वैष्णव द्वारा उद्बोधन दिया गया तथा कार्यक्रम की सराहना कीगई। कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कविता में छात्र-छात्राओं ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया तथा अपनी मनमोहन प्रस्तुतियां दीं।

(6) रक्षा बन्धन त्यौहार : मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल में रक्षाबन्धन त्यौहार दिनांक 21.08.2013 को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हर्षोल्लास एवं नई प्ररेणा के साथ मनाया गया।

विद्यालय में सृजनात्मक गतिविधियॉ आयोजित की गयी जिसमें बच्चों द्वारा राखियां बनाने का कार्य किया गया एवं दोपहर बाद त्यौहार बनाया गया जिसमें संस्था सचिव श्री सागरमल कौशिक, श्री तरूण शर्मा, श्रीमती पदमा चौहान अतिथि के रूप में उपस्थित थे एवं स्कूल अध्यापक श्री भरत शर्मा ने राखी त्यौहार के बारे में जानकारी दी इसके पश्चात् विद्यालय की छात्राओं ने छात्रों के तिलक लगाकर राखी बांधी व मुँह मीठा करवाते हुए एक-दूसरे को बधाई दी।

(7) कृष्ण जन्माष्टमी : मीनू मनोविकास मंदिर इन्क्लूसिव स्कूल में बड़ें ही हर्ष व उल्लास के साथ दिनांक 27 अगस्त 2013 को कृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार संस्था परिसर में स्थित शिव सांई धाम के प्रांगण में मनाया गया। विद्यालय के सम्मिलित कक्षाओं के सामान्य व विशेष बच्चों द्वारा एक साथ भगवान श्री कृष्ण की झांकिया सजाने के साज-सज्जा की साम्रगी

कृष्ण मुकुट, बासुरियां, मोर पंख, बाजू बंद, माखन मटकी आदि तैयार की गई। साथ ही विशेष शिक्षा में डिप्लोमा हेतु प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षणार्थियों द्वारा विद्यालय के बच्चों के साथ मन्दिर परिसर में कृष्ण की बाल लीलाओं से सम्बन्धित झाकियों को सजाया गया जिसमें बन्दीगह, कालिया नाग, गोवर्धन पर्वत, माखन चोरी, पूतना वध, गुरूकुल, कंस संहार गोपियों संग रासलीला आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया। बच्चों के मनोरंजन हेतु प्रशिक्षणर्थियों व विद्यालय स्टॉफ द्वारा मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिव सांई धाम मन्दिर में श्री कृष्ण की पूजा अर्चना कर चरणामृत व पंजीरी का प्रसाद वितरण किया गया।

(8) राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद स्थापना दिवस : दिनांक 29 अगस्त 2013 को क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सांस्कृतिक एवं खेलकूद आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल, चाचियावास के बच्चों ने 100 मीटर रेस एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद श्री एन. के. जंगीरा बच्चों के कार्यक्रम से प्रभावित हुये जिन्होने विद्यालय एवं संस्था का विजिट भी किया।

सुर्खियाँ जून 2013 से अगस्त 2013 तक ब्यावर

(9) शाला गणवेश वितरण कार्यक्रम एवं अभिभावक बैठक :- संजय इन्क्लुसिव स्कूल ब्यावर में दिनांक 19.07.2013 को विद्यालय गणवेश वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया व इससे पूर्व अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता का संचालन कर रही श्रीमती क्षमा आर. काकड़े, मुख्य अतिथि श्रीमती कुसुमलता शर्मा, श्री राजेन्द्र व्यास, उनकी बहन श्रीमती सुमन लता व्यास, श्रीमति मन्जू, श्रीमति शीला देवी, गजेन्द्र जी व्यास श्री नितिन जी तोषनीवाल आदि ने विद्यालय प्रांगण पधार कर हमारा मान सम्मान बढाया।

(10) शैक्षणिक भ्रमण (नील कण्ठ महादेव) :- राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था चाचियावास द्वारा संचालित संजय इन्क्लूसिव स्कूल, ब्यावर में दिनांक 12.08.2013 को नीलकंठ महादेव के मन्दिर के शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। जिसमें समस्त स्कूल के बच्चे, स्कूल स्टॉफ एवं ग्रामीण सी.बी.आर. के बच्चों तथा अभिभावकों ने भी भाग लिया।

प्रतिष्ठा में, _____

मुद्रित सामग्री | बुक पोस्ट

_____

_____

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था
''विश्वामित्र आश्रम''
ग्राम - चाचियावास (जनाना अस्पताल से 4 किमी आगे),
पोस्ट - गगवाना, अजमेर, जिला-अजमेर (राज.) 305023
Email : rmkm_ajm@yahoo.com, rmkm.a@rediffmail.com
Ph.# : 0145-2794481, Fax : 0145-2794482, Mob.: 9829140992

सौजन्य : Vibha
मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, पुरानी मंडी, अजमेर